जिज्ञासु फॉन

राइजा सिकनिन

जिज्ञासु फॉन

राइजा सिकनिन
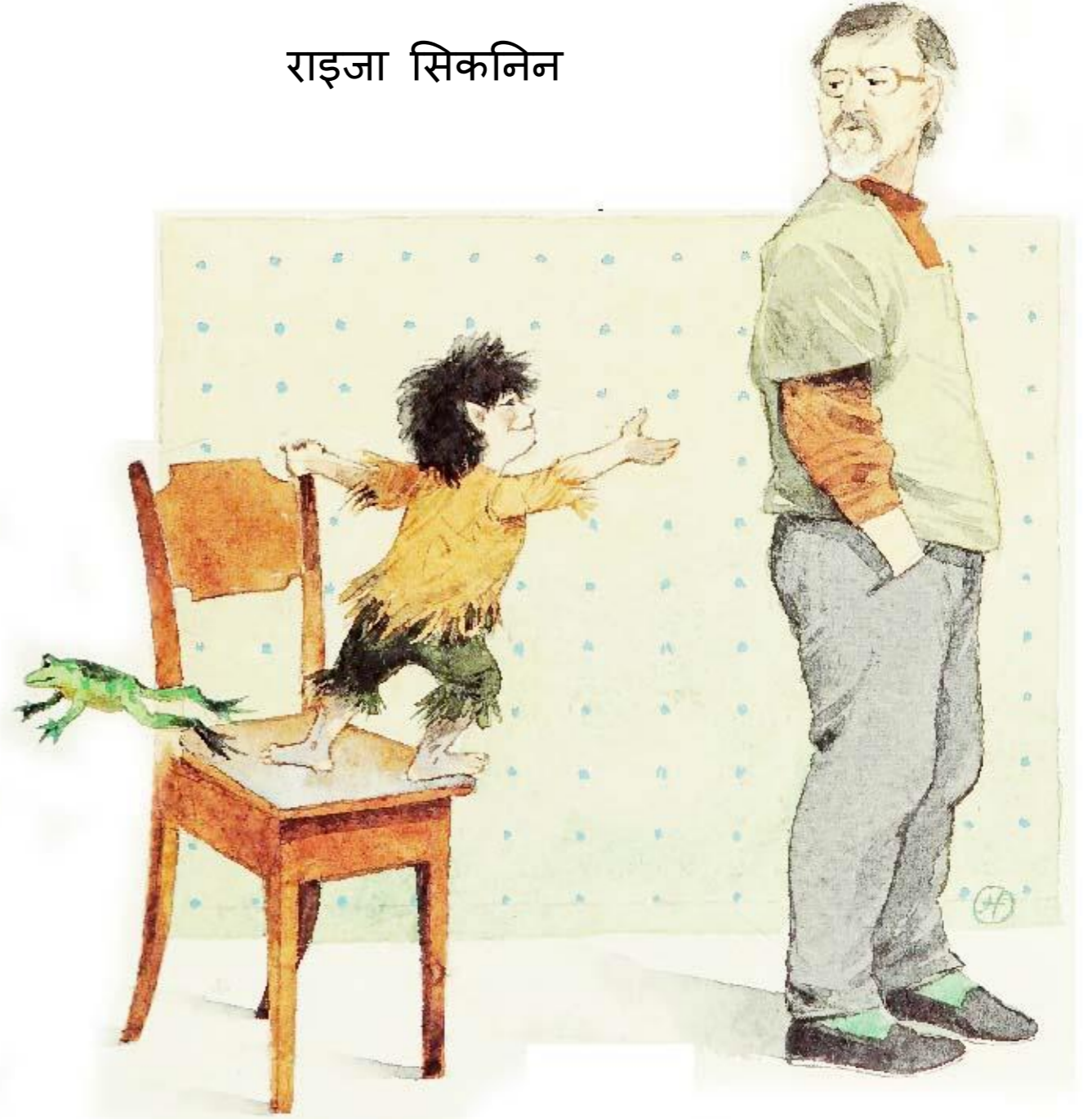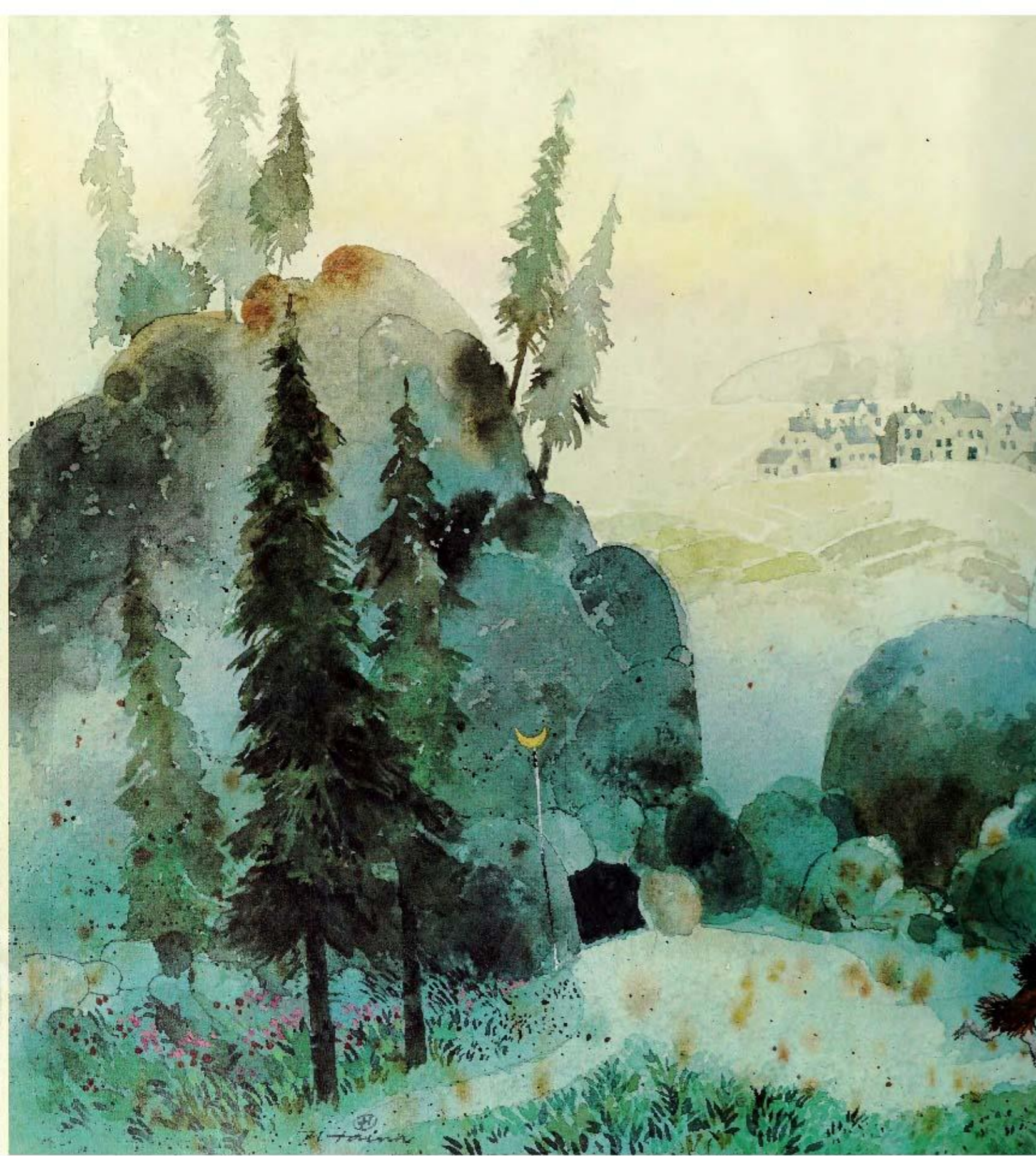
एक समय था जब जंगल फॉन्स* से भरे रहते थे. वह जुगनुओं से प्रज्वलित गुफाओं में रहते थे और कभी न बुझने वाली ज्वाला उनकी गुफाओं को गर्म रखती थी.

(*फॉन एक प्रकार का काल्पनिक प्राणी हैं जो छोटे आकार के आदमी जैसे होते हैं, लेकिन उनके पैर एक बकरी के पिछले पैरों जैसे होते हैं और बकरी की तरह ही उनकी पूँछ, सींग और कान होते हैं.)

सभी फॉन्स प्रसन्नचित्त जीवन जीते थे. वह शहद खाते थे और झरनों का मीठा पानी पीते थे और दुख का उन्हें आभास भी न था. सारा दिन वह अपनी बाँसुरियां बजाते थे और रात के समय एक-दूसरे को कहानियाँ सुनाते थे.

हर वर्ष गर्मियों में एक मनोरंजक उत्सव के लिए सारे फॉन उस जगह इकट्ठा होते थे जहाँ पेड़ों की कटाई हो रखी होती. वह गाते, नाचते और मौज-मस्ती करते. उनके नाचने-गाने की आवाज़ें दूर तक सुनाई देती थीं.

खेतों की उपज को लेकर चिंतित थके-हारे किसान सूर्यास्त के समय जब वापस लौटते तो उन्हें जंगल से आती संगीत की आवाज़ें सुनाई देतीं. इस बात से चिंतित मछुआरे कि वह कितनी मछलियाँ पकड़ पायेंगे, जब सूर्योदय का समय वह अपने जाल लगाने के लिए घरों से निकलते तो उन्हें जंगल से संगीत की आवाज़ें सुनाई देतीं. हर वह व्यक्ति जिसे जंगल से आतीं उल्लास की आवाज़ें सुनाई देतीं थीं, किसी न किसी कारण व्याकुल था. किसी भी मनुष्य को आनंद और उल्लास का पता न था और इस कारण जंगल से आती आवाज़ें सुनकर सब डर जाते थे.

इसलिए लोगों ने तय किया कि वह पता लगायेंगे कि अजीब सी आवाज़ें कहाँ से आती थीं. जब लोगों को जंगल में फॉन्स मिले तो उन्होंने देखा कि फॉन्स कितना मस्त और चिंता-मुक्त जीवन जीते थे. यह देखकर लोगों को उन पर गुस्सा आया. आखिर क्यों उन फॉन्स को दुख का अहसास नहीं था जबकि उन लोगों के जीवन में ज़रा सा भी आनंद और उल्लास न था. उनके क्रोध ने उनके सुनने की शक्ति को तेज़ कर दिया.

अब हर रात संगीत की ध्वनियाँ और अनोखी फुसफुसाहटें सुनकर लोग व्याकुल हो जाते और सारी रात अपने बिस्तरों में छटपटाते रहते. सुबह उठ कर सब शिकायत करते कि फॉन्स उन्हें सोने नहीं देते थे इस कारण वह हर समय थके और निराश रहते थे.

सब ने मिलकर तय किया कि इस स्थिति से निपटने के लिए उन्हें कुछ करना होगा.

एक विशाल शिकार का आयोजन किया गया. बंदूकें लेकर लोगों ने जंगल पर दावा बोल दिया. उन्होंने अपने शिकारी कुत्ते छोड़ दिये और डर से भागते हुए फॉन्स पर गोलियाँ चलाईं. कुत्तों ने फॉन्स को जंगल के भीतर, बहुत भीतर, खदेड़ दिया.

उस दिन से सब फॉन चौकने और संकोची हो गए. अपनी कहानियाँ वह बहुत धीमी आवाज़ में एक-दूसरे को सुनाते. उनके गाने-बजाने की आवाज़ अब शायद ही सुनाई देती. अब अपना उत्सव वह वर्ष की सबसे अँधेरी रात में मनाते और प्रकाश के लिए सबसे छोटी मशालें जलाते.

उस दिन से लोग अच्छी नींद सोने लगे और फसलें काटने और मछली पकड़ने का काम अच्छे से करने लगे. अब कोई भी उनकी शांति को भंग न करता था.

लेकिन एक नन्हा फॉन था जो मनुष्यों को लेकर बहुत जिज्ञासु था. एक दिन उसने तय किया कि वह स्वयं पता लगायेगा कि मनुष्य कैसे थे. उसका विचार जान कर अन्य फॉन्स भयभीत हो गए क्योंकि उनका विश्वास था कि लोग मूर्ख और दुष्ट होते हैं. लेकिन उन्होंने उस नन्हे फॉन को अनुमति दे दी क्योंकि दूसरों के अनुरोध को ठुकराना उनके लिए असंभव होता था.

तो नन्हा फॉन चल दिया. वह पहाड़ से नीचे उतरा और हरे-भरे जंगल के बीच से कई दिनों तक घुमावदार रास्ते पर चलता रहा. एक वृद्ध मेंढक, जिसने अपनी गोल-गोल आँखों से संसार के कई प्रकार के दृश्य देखे थे, उसके साथ चलने लगा. बूढ़ा मेंढक अपने आप को इतना बुद्धिमान समझता था कि उसे लगता था कि वह मनुष्यों के बीच नन्हे फॉन का मार्गदर्शन कर सकता था.

जब आखिरकार मेंढक और फॉन मनुष्यों के संसार में पहुँचे तो फॉन आश्चर्य से हर ओर देखने लगा. सब कुछ कठोर, उदासीन और धुँधला था. न जंगल की ध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं, न कहीं कोई फूल दिखाई दे रहे थे.

फॉन ने कई बार सुना था कि मनुष्य दुष्ट होते हैं, इसलिए उसकी पहली कामना थी:

"मैं एक दुष्ट आदमी से मिलना चाहता हूँ."

"तुम्हारी यह इच्छा तो सरलता से पूरी की जा सकती है," मेंढक ने कहा.

मेंढक वहाँ से चला गया और बहुत शीघ्र ही लौट आया. उसने कहा, "मैंने एक दुष्ट आदमी ढूँढ लिया है. वह आ रहा है."

जैसे ही नन्हे फॉन ने देखा, एक आदमी उधर आया. रास्ते में दिखाई पड़ती हर चीज़ को वह गुस्से से ठोकर मार रहा था. उसने मेंढक को भी पाँव से कुचलने का प्रयास किया. उसके पीछे-पीछे चलते वह दोनों उसके घर तक आ गए. लेकिन उसे पता ही न चला क्योंकि फॉन्स को देखने की क्षमता लोगों ने बहुत पहले ही खो दी थी. अब वह वही देख पाते थे जो वह जानते थे कि उनके सामने है.

नन्हा फॉन और मेंढक खिड़की के ऊपर बैठ गए और उन्होंने देखा कि आदमी पाँव पटक-पटक कर कमरे में चल रहा था. फिर वह आदमी एक कुर्सी में धड़ाम से बैठ गया और गुस्से में तब तक बड़बड़ाता रहा जब तक की उसे नींद नहीं आ गई. फॉन और मेंढक दुष्ट आदमी के निकट आ गए और उस आदमी के सपनों को देखने लगे. उन्होंने देखा कि सपने में वह आदमी खिड़कियाँ तोड़ रहा था और फूलों को पाँव तले कुचल रहा था.

“बिल्कुल स्पष्ट है कि उसे बुरा लग रहा है,” फॉन ने कहा. “मैं उसके लिए बाँसुरी बजाऊँगा. शायद संगीत सुनकर वह अपना गुस्सा भूल जाए.”

फॉन अपनी बाँसुरी बजाने लगा. मधुर संगीत ने उस आदमी के सपनों में प्रवेश. अगली रात भी फॉन ने बाँसुरी बजाई और उससे अगली रात भी. प्रत्येक सुबह वह आदमी पिछली सुबह की तुलना में अधिक प्रसन्नता से उठा. वह सोचने लगा कि अब उठते समय वह क्रोधित क्यों न होता था और उसके सपने बदल क्यों गए थे, यहाँ तक कि एक रात उसने सपना देखा कि उसके पास देखभाल करने के लिए उसका अपना एक मेंढक था.

“कितनी आश्चर्यजनक बात है,” दुष्ट आदमी ने अगली सुबह अपने आप से कहा. “पता नहीं क्यों संसार अब अधिक सुंदर लगने लगा है.”

उस दिन कुत्ते का एक पिल्ला अपने साथ लेकर वह आदमी घर लौटा. उसने पिल्ले से कहा, “तुम मेरे मित्र हो और मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा.”

जब फॉन ने उसकी बात सुनी तो उसने मेंढक से कहा, “मनुष्यों के बारे में तुम्हें कोई जानकारी नहीं है. मैंने तुम्हें एक दुष्ट आदमी ढूँढने के लिए कहा था, लेकिन यह आदमी तो बिलकुल भी दुष्ट नहीं है.”

और उस आदमी को अपने नए पिल्ले के साथ पीछे छोड़ कर वह दोनों वहाँ से चल दिए.

"अब तुम किस प्रकार के आदमी से मिलना चाहोगे?" मेंढक ने पूछा.

फॉन ने कई बार मनुष्यों की मूर्खता के बारे में सुन रखा था, इसलिए उसकी दूसरी कामना थी:

"मैं एक मूर्ख आदमी से मिलना चाहता हूँ."

"तुम्हारी यह इच्छा तो सरलता से पूरी की जा सकती है," मेंढक ने कहा.

मेंढक वहाँ से चला गया और बहुत शीघ्र ही लौट आया. उसने कहा, "तुम्हारे लिए मैंने दो मूर्ख ढूँढ लिये हैं."

और फॉन मेंढक के पीछे चल पड़ा. वह एक ऐसे घर आए जो किताबों से भरा हुआ था. भीतर एक आदमी और एक औरत एक मेज़ के पास बैठे किताबें पढ़ रहे थे और बीच-बीच में कुछ बुदबुदा रहे थे.

सारा दिन लोग उनके पास आए और उनसे प्रश्न किए. दोनों ने उनके प्रश्नों के उत्तर दिए. अगर कोई उनकी बात से सहमत न होता तो दोनों में से एक उठकर कोई किताब ले आता और अपनी बात को सही प्रमाणित करने के लिए किताब का कोई अंश पढ़ कर सुनाता. फॉन और मेंढक किताबों की एक अलमारी के निकट बैठ गए और उनकी बातें सुनने लगे. आखिरकार फॉन ने मेंढक से कहा, "यह लोग मूर्ख नहीं हो सकते. ऐसा लगता है कि यह तो सब कुछ जानते हैं."

"थोड़ी देर प्रतीक्षा करो," मेंढक ने कहा.

अगला व्यक्ति फॉन्स के बारे में चर्चा करना चाहता था.

“फॉन्स जैसे प्राणी होते ही नहीं,” आदमी और औरत ने एक साथ कहा. दोनों ने एक-एक किताब अलमारी से निकाली और किताबों के लंबे-लंबे अंश पढ़ने लगे जिन में बताया गया था कि फॉन्स का कोई अस्तित्व नहीं होता.

“तो अब,” मेंढक ने फॉन से कहा, “तुम क्या कहना चाहोगे?”

“अगर मूर्ख लोग ऐसे हैं तो मैं किसी बुद्धिमान आदमी से मिलना चाहूँगा,” फॉन ने उत्तर दिया.

“यह ऐसी कामना है जिसे सरलता से पूरा नहीं किया जा सकता,” मेंढक ने कहा. “इसमें समय लगेगा. तुम यहीं मेरी प्रतीक्षा करो.”

इस बार मेंढक गया तो लंबे समय के बाद लौटा.

मेंढक फॉन को जंगल के किनारे स्थित एक छोटे से घर की ओर ले गया जहाँ एक आदमी एक बगीचे में टहल रहा था. बीच-बीच में वह रुक जाता और पत्थरों और घास को देखकर अपना आप से कहता, "वो पत्थर धूप में चमक क्यों रहा है?" और "वह घास को तिनका अन्य तिनकों से दूर क्यों झुक रहा है? कितनी आश्चर्यजनक बात है, मुझे उसका कारण जानना होगा."

जब वह आदमी अपने घर के भीतर गया तो फॉन और मेंढक भी उसके पीछे-पीछे अंदर आ गए. घर किताबों से भरा हुआ था.

"यह अच्छा लक्षण नहीं है," फॉन ने कहा.

वह आदमी अपनी मेज़ पर बैठ गया और लिखने लगा. बार-बार वह अपना सिर सीधा करता और कहता, "पेड़ की वो शाखा मेरी खिड़की को बार-बार क्यों खटखटा रही है?" या "मैं एक ही पल में इतना प्रसन्नचित्त और इतना उदास क्यों हो जाता हूँ?" या सिर्फ, "कितना आश्चर्यजनक. कितना अधिक आश्चर्यजनक."

फॉन और मेंढक अँगीठी के ऊपर ताक पर बैठ गए और विचारपूर्वक उस आदमी को देखने लगे.

"वह बहुत बुद्धिमान दिखाई नहीं पड़ता," फॉन ने कहा. "ऐसा लगता है कि उसे किसी बात की जानकारी नहीं है. लेकिन वह मुझे अच्छा लगता है. कितने आश्चर्य की बात है."

तभी उस बुद्धिमान आदमी ने सिर उठा कर ऊपर देखा.

"किसने कहा, 'कितने आश्चर्य की बात है'?" उसने पूछा. तब उसने फॉन और मेंढक को देखा और मुस्कराया.

"एक फॉन," उसने कहा, "और एक मेंढक. सच में कितने आश्चर्य की बात है."

"आप से कोई गलती हो रही है," फॉन ने अचानक भयभीत होकर कहा. "मनुष्य फॉन्स को नहीं देख सकते."

"नहीं, वह नहीं देख सकते," आदमी ने कहा, "लेकिन मैं तुम्हें देख सकता हूँ. यह आश्चर्य की बात है, क्यों है न?"

और वह आदमी और फॉन आपस में बातें करने लगे. उस आदमी ने फॉन को मनुष्यों की जीवनचर्या के बारे में बताया. फिर फॉन ने उस आदमी को फॉन्स की जीवनचर्या के विषय में बताया. और अँगीठी के ऊपर ताक पर बैठा मेंढक अपनी गोल-गोल आँखों को झपकाते हुए उनकी बातें सुनता रहा.
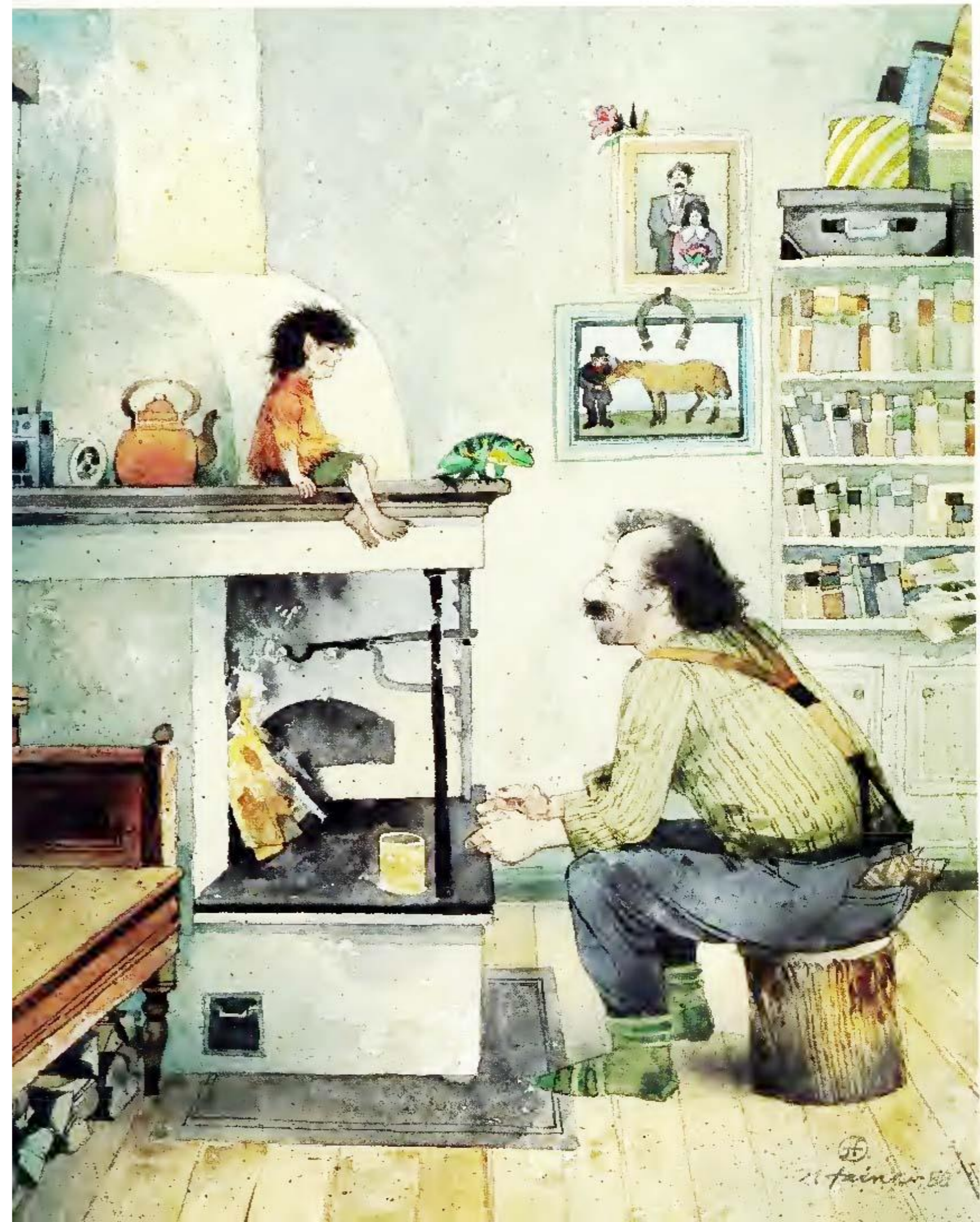
और इस तरह नन्हा फॉन उस आदमी के पास ही रुक गया और मेंढक फॉन्स के जंगल लौट आया. लौट कर उसने सब को बताया कि मनुष्य कैसे थे और उनकी जीवनचर्या क्या थी. फॉन्स ने मनुष्यों के बारे में जितना अधिक जाना उतना ही उनका भय कम होता गया. और कुछ समय उपरांत फॉन्स पहाड़ों से उतर कर नीचे हरी-भरी घाटी में आ गए. वह फिर से अपनी कहानियाँ ऊँची आवाज़ में सुनाने लगे. उनकी बाँसुरियों की धुन फिर से सुनाई देने लगी. वह फिर से गर्मियों के दिनों में अपना उत्सव मनाने लगे. अब उन्हें मनुष्यों से डर न लगता था. बल्कि उन्हें तो लोगों पर दया आती थी क्योंकि वह चिन्ताओं और परेशानियों से घिरे हुए थे.

बुद्धिमान आदमी ने फॉन्स के बारे में लोगों का बताया. उसकी बातें सुनकर लोगों को विश्वास होने लगा कि संसार में फॉन्स भी रहते थे. फॉन्स के विषय में जितना अधिक लोग जानने लगे उतना ही उनका क्रोध घटने लगा. फॉन्स का गाना-बजाना भी अब उन्हें विचलित न करता.

नन्हा फॉन मनुष्यों के संसार में ही रहा, वह उत्सुक था कि वह और नया क्या कुछ जान सकता था. वह शायद अभी भी कहीं आसपास हो, अपने संगीत से आपको प्रभावित करता, आपके मन में यह विचार लाता, 'कितना आश्चर्यजनक है'.
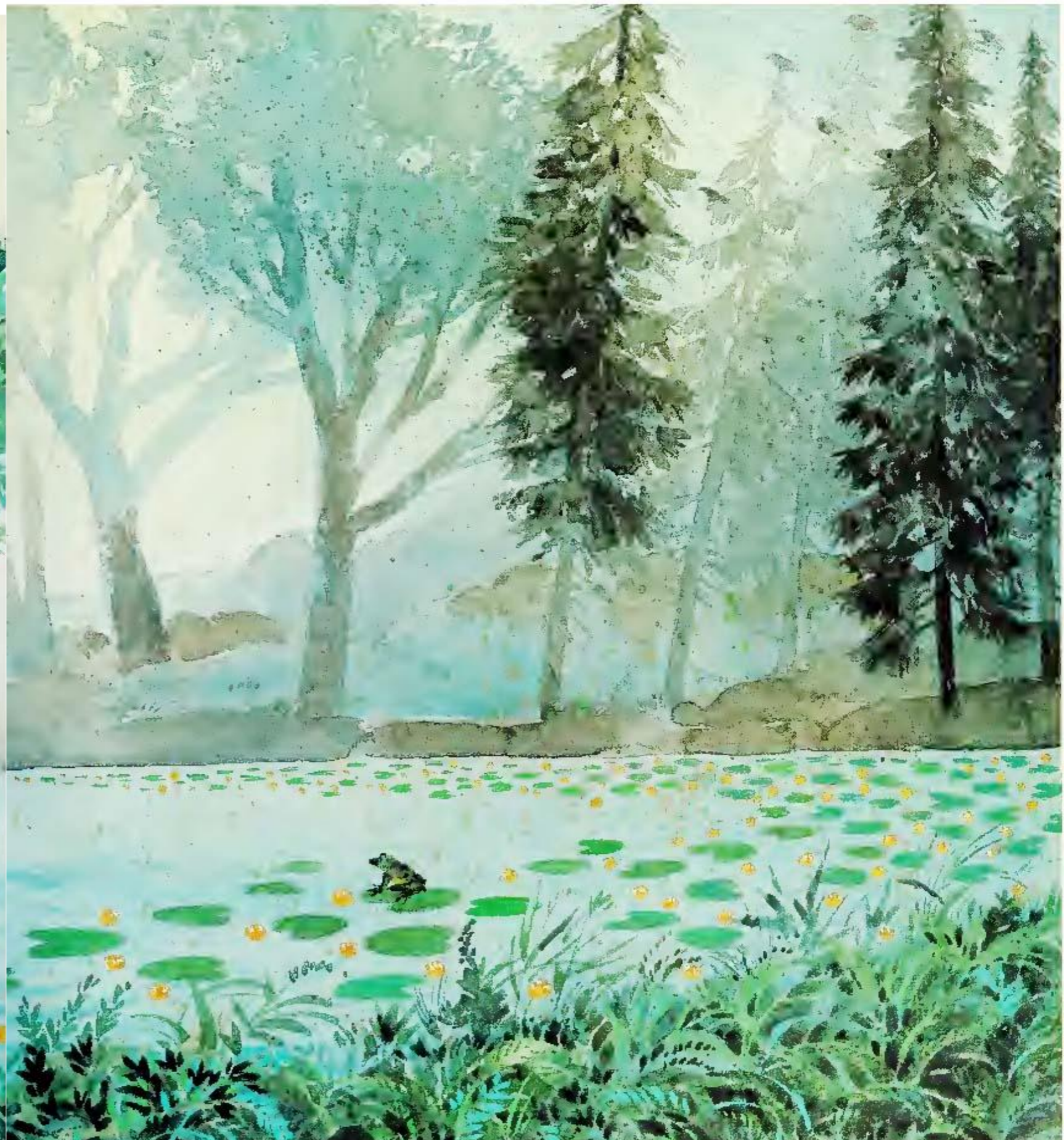
लेकिन मेंढक बूढ़ा था, थका हुआ था और आराम करना चाहता था. इस कारण घने जंगल के बीच स्थित एक तालाब की ओर वह चला गया. गर्मियों में संध्या समय आपको उसके टरटराने की आवाज़ सुन सकते हैं. अब वह प्रसन्न है क्योंकि वह उन बातों की चिंता नहीं करता जिनसे वास्तव में उसका कोई संबंध नहीं है.